समाजवादी चिन्तक प्रताप भैय्या का आर्थिक क्षेत्र में योगदान

डॉ आशा खाती
स अ/एल टी (सामान्य)
रा क उ मा वि भतरौंजखान
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

ABSTRACT

प्राचीनकाल से ही हमारा देश भारत प्राकृतिक संसाधन हो या संस्कृति एक समृद्ध राष्ट्र रहा, कई विदेशी आक्रमणों के क्रम में अन्ततः ब्रिटिशकाल की शोषणकारी आर्थिक नीतियाँ भारत के स्थानीय हस्तशिल्प, कुटीर एवं लघु उद्योगों के लिए अहितकार रही। जिनसे उत्तराखण्ड भी अछूता नहीं रहा। उत्तराखण्ड की ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। कृषि, पशुपालन, नौकरी, मजदूरी, छोटे–छोटे हस्तशिल्प व कुटीर उद्योग यहाँ के निवासियों की आर्थिक धुरी एवं आजीविका के मुख्य साधन रहे हैं। यहाँ के जंगल पर्वत की शोभा हैं। राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। पेड़–पौधे जलवायु को शुद्धता प्रदान करते हैं। कृषक अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय भूमिका का निर्वहन करते हैं। कालान्तर में रोजगार प्राप्ति, उच्च शिक्षा व अच्छे स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए यहाँ से जनसंख्या का प्रवर्जन व पलायन होता रहा। यही कारण है कि यहाँ की अर्थव्यवस्था में 'धनादेश अर्थ–व्यवस्था' (पोस्टल इकॉनामी) भी प्रमुख रूप से निहित है।

उत्तराखण्ड के कई इतिहास पुरूषों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कृतित्व में कई सुधार कार्यों का समावेश किया। आधुनिक राष्ट्र निर्माण के लिए जिनकी कार्य स्थली एक तरह से सम्पूर्ण समाज रहा प्रताप भैयया उत्तराखण्ड की उन्हीं महान विभूतियों में शामिल हैं। एक प्रख्यात समाजवादी चिन्तक, पेशे से वकील, उच्चकोटि के कानूनविद्, प्रसिद्ध शिक्षाविद्, मूल्यों की राजनीति करने वाले सिद्धान्तवादी राजनेता व एक नियोजक के रूप में उनके जीवन–दर्शन एवं कृतित्व को जाना जाता हैं।

मुख्य शब्द– शिक्षा, आर्थिक विकास, नियोजन, स्थानीय उत्पाद, स्वरोजगार, राष्ट्रहित

संक्षिप्त जीवन परिचय :– प्रताप भैय्या का जन्म 10 दिसम्बर 1930 को च्यूरीगाड़ (नैनीताल) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में पूरी की। इण्टरमीडिएट की शिक्षा राजकीय इण्टर कालेज नैनीताल से प्राप्त करने के बाद सन् 1948 में उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी चिन्तन व शैक्षिक दर्शन को अनुकरणीस माना। विश्वविद्यालय शिक्षा के समय से ही राजनीति की तरफ उनका रूझान हुआ। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे। सन् 1957 में टनकपुर–जहाँनाबाद विधान से प्रजा समाजवादी दल से विधायक चुनकर उत्तर प्रदेश विधानसभा में पहुँचे और सन् 1967 में नैनीला क्षेत्र से चुनाव जीतकर उत्तर प्रदेश विधान सभा में स्वास्थ्य एवं सहकारिता मंत्री के महत्वपूर्ण पद पर चुने गए।

प्रताप भैय्या के विचारों एवं कार्यों की अधोरचना ग्रामीण, समाजिक, आर्थिक रूप से उपवंचित वर्ग था। उन्होंने देश की राजनीतिक पिछड़ेपन का कारण शिक्षा की पहुँच सभी वर्गों तक न होने व उचित नियोजन के अभाव को माना, इसलिए समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता व आर्थिक शोषण को दूर करने के लिए वे सदैव बदलाव के प्रति लक्ष्योन्मुखी रहे

विधायक एवं स्वास्थ्य मंत्री पद पर रहते हुए दिए गए आर्थिक सुझाव एवं किए गये कार्य–

प्रताप भैय्या ने पहाड़ के जल, जंगल, जमीन के संरक्षण एवं सवर्द्धन के लिए शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार व आर्थिक नियोजन को जमीनी आवश्यकता माना जिससे पलायन को रोका जा सकता है। विधायक काल के समय बहुत महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे– कुमाऊँ फारेस्ट कमेटी की स्थिति, श्रम एवं सेवा नियोजन, टेक्सटाइल सूती मिल मजदूरों के अनशन के हित संबंधी, काश्तकार व किसानों के हितों से संबंधित आर्थिक महत्व के विषयों को विधानसभा में उठाया ताकि सरकार जनहित में योजनाओं का निर्माण करें।

उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश का हिस्सा) के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों का व्यापक दौरा किया और माना कि ग्रामीण क्षेत्रों से आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया तय की जाये।

वे योजनाओं को ग्रामोन्मुखी किए जाने के पक्षधर थे। वे नियोजन में समाजिक कार्यकर्ताओं, लोक सेवकों, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों, विद्यालय के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों, किसानों, नवयुवकों, महिलाओं, मजदूरों की भी भागीदारी तय किए जाने के हिमायती रहे। महिलाओं के अधिकारों, उनकी आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए बालिका शिक्षा व रोजगार प्रबन्धन कराये जाने की माँग की। इस हेतु शिक्षा के लिए उन्होंने व्यक्तिगत प्रयास भी किए।

प्रताप भैय्या ने स्वास्थ्य मंत्री के पद पर रहते हुए अल्प कार्यकाल के दौरान ही विभिन्न प्रदेशों की स्वास्थ्य सम्बन्धी नीतियों का अध्ययन किया। रोटी कपड़ा और मकान के साथ ही शिक्षा एवं स्वास्थ्य को मानव की मूल–भूत आवश्यकतओं में शामिल किया जाना समय की माँग है। इन बातों की उन्हें गहरी सूझ थी। स्वास्थ्य मंत्री पद पर रहते हुए प्रताप भैय्या ने पहली बार उत्तर प्रदेश में 'महिला नर्सेज ट्रेनिंग' की शुरूआत की। इस महत्वपूर्ण नीति से बालिकाओं और महिलाओं की भागीदारी को राष्ट्र की अर्थव्यवस्था तक न सिर्फ प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा अपितु सार्वजनिक स्वास्थ्य व महिला सशक्तिकरण के लिए बेहद महत्वपूर्ण कदम उठाया। यह नीति व कार्य राष्ट्र हितार्थ दूरगामी पहल साबित हुई।

विद्यालयों की स्थापना से स्थानीय लोगों को रोजगार – प्रताप भैय्या ने शिक्षा को चरित्र निर्माण का सशक्त माध्यम माना। वे कहते थे शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो रोजगार देने वाले लोगों को उत्पन्न करें। समाज की शिक्षा संरचना व आर्थिक नियोजन पर गम्भीरता से विचार किया। बालिका शिक्षा को समान अनुपात

में आगे ले जाकर युवाओं को विद्यालयी व विश्वविद्यालय शिक्षा से पूरी तरह से जोड़ना चाहते थे। वे बराबरी की बात करते थे न आधी दुनिया या पिछला पायदान। थारू–बोक्साड जनजाति के लोगों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर जागृति फैलाने का कार्य किया। जुलाई 1959 ई0 में थारू इण्टर कालेज खटीमा की स्थापना इस दिशा में लिया गया महत्वपूर्ण कदम था।

1 जुलाई 1964 में भारतीय शहीद सैनिक विद्यालय नैनीताल, सन् 1967 में आचार्य नरेन्द्र देव विद्यालय खटीमा की स्थापना की। 1969 ई0 आचार्य नरेन्द्र देव निधि की स्थापना की। जून 1987 में राष्ट्रीय शहीद सैनिक स्मारक विद्यापीठ नैनीताल की स्थापना की। आचार्य नरेन्द्र देव विद्यालय लोहरियासाल, कठघरिया (नैनीताल), आचार्य नरेन्द्र देव विद्यालय गैरखेत मासी (अल्मोड़ा) आचार्य नरेन्द्र देव विद्यालय मंगलता–अल्मोड़ा, अचार्य नरेन्द्र देव विद्यालय हमीरवाला, जसपुर (उधमसिंह नगर) जैसी अनेकों संस्थाओं की स्थापना की। तत्कालीन पिछड़े क्षेत्रों की विषम परिस्थितियों में ये संस्थाएं लक्ष्योन्मुखी रही। सन् 1969–70 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय की स्थापना को लेकर व क्षेत्रीय नियोजन के आधार पर विशेष योजना आदि विषयों को लेकर आन्दोलनरत रहे, कुमाऊँ विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य और एक शिक्षाविद् के रूप में शैक्षिक नियोजन को सही विकेन्द्रीकरण का रूप दिए जाने के पक्षधर रहे। सन् 1990 में मुनस्यारी भ्रमण के दौरान प्रताप भैय्या ने कहा था बेरोजगरी जहाँ पूरे देश में व्याप्त है, पर्वतीय क्षेत्र में यह और भी भयावह है। मैं बेरोजगारी के लिए शिक्षा को उत्तरदायी नहीं मानता हूँ। शिक्षा का कार्य मनुष्य को सुंस्कृत व विचारशील मानव बनाना है और यदि यह कार्य शिक्षा नहीं कर पा रही है तो शिक्षा प्रणाली का दोष अवश्य है, लेकिन बेरोजगारी के लिए हमारा नियोजन उत्तरादायी है।

उनका स्पष्ट मानना था कि हमें शिक्षा और नियोजन दोनों को साथ लेकर चलना होगा। आचार्य नरेन्द्र देव शिक्षा निधि के माध्यम से स्थापित शैक्षिक संस्थाओं द्वारा जहाँ समाज में शिक्षा की ज्योति चहुँ तरफ फैली वहीं शिक्षक, प्रधानाचार्य,कार्यलय कर्मचारी के रूप में सेवा देकर हजारों की संख्या में स्थानीय समाज का एक योग्य वर्ग न सिर्फ अपने कौशलों को विकसित कर रोजगार प्राप्त कर सका बल्कि शिक्षा हासिल कर विशाल युवा वर्ग समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कुशल नेतृत्य से सेवा देकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी निभा रहा है। विद्यालयों में पुस्तकीय शिक्षा के साथ ही स्काउटिंग–गाइडिंग, राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर को शामिल किया जाना भावी समाज में संवेदनशील युवा वर्ग तैयार किए जाने की दिशा में नियोजित दृष्टिकोण था।

संस्थापक – आचार्य नरेन्द्र देव राष्ट्रीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान – प्रताप भैय्या ने स्व रोजगार अपनाये जाने व कुटीर व्यवसायों की स्थापना पर बल दिया। ग्रामीण क्षेत्र की समाज की हाशिए पर बल दिया। ग्रामीण क्षेत्र की समाज की हाशिए पर खड़ी महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने, उनमें कौशल विकास

को बढाने के लिए नैनीताल के तल्लीताल में आचार्य नरेन्द्र देव राष्ट्रीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की। इस संस्थान की स्थापना के पीछे उनकी महत्वकांक्षी योजना यह थी कि आर्थिक विकास कार्यक्रमों को एक नियोजित रणनीति के द्वारा समाज के सर्वाधिक उपेक्षित व कमजोर वर्ग तक पहुँचाने के लिए उन्हें व्यवसायिक प्रशिक्षण का लाभ उपलब्ध काराना होगा। शुरूआती चरण में यहाँ महिलाओं को सिलाई– बुनाई करने व मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। कालान्तर में सरकार द्वारा इस योजना को सराहकर सहायता प्रदान की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह बनाकर विभिन्न ब्लॉकों के गाँवों में सिलाई–बुनाई, मोमबत्ती निर्माण, सॉफ्ट ट्वाइज, ब्यूटिशियन व कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त किया है। महिलाएं आर्थिक रूप से स्वयं आत्मनिर्भर बनकर रोजगार के अवसरों को बढा रही हैं। इस संस्थान के माध्यम से नैनीताल, ऊधमसिंह नगर, हरिद्वार, रूड़की के ग्रामीण अँचलों तक सन् 1986 से 2012 तक 18000 लोग प्रशिक्षित हुए। आर्थिक विकास की संरचना में कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित होकर महिलाएं आर्थिक स्वालंबन की ओर बढी हैं। हर हाथ में हुनर देने की कार्य योजना से कई परिवारों को आर्थिक प्रतिफल मिला। इस तरह परम्परागत ढाँचे में बुनियादी परिवर्तन लाने से ग्रामीण परिवेश में विकास को बढावा मिला है।

संस्थापक– संयोजक राष्ट्रीय पर्वतीय अंचल विकास विचार गोष्ठी एवं दिल–दिमाग, हाथ, खेल, खलिहान, उद्यान प्रदर्शनी (1975)– देश में सन् 1975 में आपालकाल के दौरान जब विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता छिन चुकी थी। किसी भी प्रकार के सामाचिक आयोजन को शक की निगाह से देखा जाता था। प्रताप भैय्या के मन में विचार आया कि क्यों न समाज की समस्याओं को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उजागर कर जन–जागृति पैदा की जाये। जनता विकास कार्यों के लिए सरकारों की बाट जोहने के बजाय स्वयं अपने स्तर से प्रयास करे। अपने सहयोगियों के साथ प्रतिवर्ष प्रताप भैय्या इस कार्यक्रम का आयोजन शरदोत्सव के अवसर पर अक्टूबर माह के द्वितीय शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार को करते थे। सन् 1975 के शरदोत्सव से यह गोष्ठी व प्रदर्शनी आचार्य नरेन्द्र देव शिक्षा निधि उत्तर प्रदेश व जन– नियोजन आयोग उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में की गयी। सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को गोष्ठियों के माध्यम से मुखरित करने के साथ ही स्थानीय कृषकों व हस्त शिल्प उद्यमियों की विशेष पैदावार, जैसे– स्थानीय फल – सेब, नासपाती, नारंगी, आँवला, जड़ी–बूटी, फलों–फूलों के जूस, जैली, मुरब्बा, अचार, मोटी दाले, हल्दी, लाल मिर्च, सब्जियाँ, मडुवा, शहद, बाँस के रिंगाल, टोकरी , मिट्टी व ताँबे के बर्तन, लकड़ी के सामान, चटाई, थुलमे, पंखी, दन, शाल, गलीचे, ऊनी वस्त्र, खादी ग्रामोद्योग के उत्पाद, स्कूली बच्चों के स्टॉल प्रदर्शनी में लगाये जाते थे। सत्तर व अस्सी के दशक में वन विभाग, नियोजन विभाग, सूचना विभाग, पर्यटन विभाग, राजकी वैधशाला, पशुपालन, मत्स्य, राजकीय रक्षालस संस्थान पटवाडाँगर, मौन–पालन विभाग, उद्योग व अन्य सरकारी व गैर सरकारी विभागों के स्टॉल व प्रदर्शनी लगती थी।

जिला नियोजन विभाग द्वारा हस्तशिल्प उद्यमियों, काश्तकारों, विभिन्न प्रदर्शनियों के मेहनतकशों को नकद पुरस्कार के रूप में धनराशि भी प्रदान की गयी। यह संस्था सन् 2005 तक चली। प्रत्येक विभागों के मुख्य अधिकारियों, जिलाधिकारी नैनीताल, तत्कालीन कुलपति देवी दत्त पन्त कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, कुमाऊँ आयुक्त गोपी कृष्ण अरोरा, सांसद मोहन सिंह, मुख्य न्यायाधीश नैनीताल उच्च न्यायालय, पूर्व राष्ट्रपति जार्ज फर्नाण्डीज, हिन्दुस्तानी आन्दोलन के संस्थापक मधु मेहता, पूर्व राज्यपाल बी0 सत्य नारायण रेड्डी ने समय–समय पर अपनी उपस्थिति देकर विचार व्यक्त किए। इन गोष्ठियों, कार्यक्रमों के द्वारा कृषकों व स्थानीय उद्यमियों की मेहनत को सराहा। स्थानीय कृषि पैदावार को बाजार उपलब्ध होने के साथ की यहाँ की संस्कृति को विस्तार मिला। किसी भी समस्या के निदान के लिए इन गोष्ठियों में जो भी विचार मंथन होता था उसकी संस्तुतियाँ केन्द्र, राज्य सरकारों व प्रशासन को भेजी जाती थी। जैसे – वृक्षारोपण को बढावा दिए जाने, पर्वतीय विकास विभाग का कार्य ऐसे अधिकारियों को सौंपा जाए जिन्हें पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक पक्षों का समुचित ज्ञान हो, पर्यटन संबंधी योजनाओं को जनोन्मुखी स्वरूप दिए जाने के सम्बन्ध में संस्तुतियाँ दी गयी जिससे पर्यटन उद्योग का लाभ स्थानीय नागरिकों को मिल सके। पर्वतीय क्षेत्र के नगरों में अन्धाधुन्ध निर्माण कार्यों को रोकने, राजकीय वाहनों को निजी कार्यों में लिए जाने के दुरूपयोग को रोकने, यहाँ के कच्चे माल से संबंधित उद्योगों की स्थापना पर्वतीय क्षेत्रों में ही किए जाने, पर्वतीय क्षेत्र के नदी–नालों के पानी को जल विद्युत पैदा करने में उपयोग में लाए जाने संबंधी सुझाव व संस्तुतियाँ दी गयी।

प्राकारान्तर में कई नतीजे सामने आए, जैसे – उत्तराखण्ड में कई अनछुए खूबसूरत भौगोलिक क्षेत्र पर्यटन मानचित्र में शामिल किए गये। उच्च शिक्षा सम्पर्क केन्द्र की तर्ज पर आधारित देश में 'इग्नू' व उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय' की स्थापना जैसी सरकारी नीतियाँ प्रताप भैय्या के शिक्षा सम्बन्धी नीतियों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता को स्पष्ट करती हैं। स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होने से व कृषकों व शिल्पियों के उत्पादों को बाजार उपलब्ध होने से लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति स्थानीय स्तर पर होने लगी। अतः पर्वतीय अंचल विकास विचार गोष्ठी एवं दिल–दिमांग, हाथ, खेत, खलिहान उद्यान प्रदर्शनी आर्थिक विषमता को कम करने की एक अनूठी पहल थी।

अध्यक्ष– आरोही संस्थान– 'आरोही' संस्थान, सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860, विदेशी अनुदान अधिनियम 1976 की धारा 6(1) और आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80(जी) व 12(ए) के अर्न्तगत पंजीकृत संस्था है। 'आरोही' एन0जी0ओ0 की स्थापना अगस्त 1992 में विकास व नियोजन में विशेष रूचि रखने वाले युवा दम्पति डॉ0 सुशील शर्मा व डॉ0 ऊना शर्मा द्वारा ग्राम– सतोली, रामगढ (नैनीताल) में की गयी।

प्रताप भैय्या के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के प्रति व्यापक दृष्टिकोण एवं नीतियों व कृतित्व से अभिप्रेरित होकरी उनके सुझावों को इस संस्था ने कार्यरूप में लिया।

प्रताप भैय्या सन् 1992 से 2009 तक आरोही प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष रहे। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य रहा प्राकृतिक संसाधनों का विकास बढे व जड़ी–बूटियों के उत्पादन क्षेत्र को विस्तृत किया जाये, स्वास्थ्य लाभ गाँव–गाँव तक पहुँचे। तकनीकी, श्रम, पूँजी, कुशल संगठन के प्रभावपूर्ण उपयोग से आरोही संस्थान ने बहुत से लोगों को रोजगार से जोड़कर रखा। स्थानीय फल खुबानी, आड़ू, चुआरू की गुठलियों से मशीनों द्वारा तेल निकाला जाता है, जो कि अनेक रोगों में लाभकारी औषधि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष 'हिमालयन हाट' का आयोजन होता है। इस ग्रामीण हिमालयन हाट में प्रताप भैय्या प्रतिवर्ष शामिल होते रहे। उत्तराखण्ड व अन्य जगहों से हजारों लोग इस मेले में आते हैं। यहाँ के स्थानीय उत्पादों, हस्तनिर्मित वस्तुओं की बहुत बिक्री होने से कृषकों, उत्पादकों की आयवर्धन होती है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा उत्तराखण्ड की संस्कृति देश के विभिन्न जगहों में अपनी पहचान को विस्तार दे रही है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए आरोही संस्थान द्वारा कक्षा 1 से 8 वीं स्तर तक 'बाल संसार' विद्यालय चलाया जा रहा है। स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अन्तर्गत रामगढ व ओखलकाण्डा विकास खण्डों के गाँवों में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य व सुरक्षित घरेलू प्रसव के लिए स्थानीय महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कुछ 'आशा कार्यकर्त्री' भी संस्था के साथ जुड़ी हैं। 'आरोग्य केन्द्र' में आधुनिक शल्य चिकित्सा उपकरण हैं। यहाँ विशेष स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भी किया जाता है।

गाँधीजी की भाँति ही प्रताप भैय्या की ग्राम्य जीवन पर अगाध आस्था थी। आर्थिक क्षेत्र में वे ऐसे नियोजन के पक्षधर रहे जहाँ प्राकृतिक संसाधनों का न्यायपूर्ण तरीके से समुचित उपयोग हो सके। किसानों, कामगारों, शिल्पियों के हाथों को मजबूती देने के उद्देश्य से उन्होंने कई आर्थिक नियोजन सम्बन्धी विचारों, नीतियों को योजनाओं का कार्य रूप दिया। आर्थिक क्षेत्र में प्रताप भैय्या के विचार, योजनागत कार्यों को सूक्ष्म रूप से मूल्यांकित कर निरन्तर लागू किए जाने की जरूरत उदयीमान समाज को आज भी है। वे एक नियोजक के रूप में असाधारण संगठनकर्ता थे। समूचे हिन्दुस्तान के विकास की कड़ी में उनका योगदान महत्वपूर्ण धरोहर है।

सन्दर्भ सूची–

1. आचार्य नरेन्द्र देव को समर्पित एक व्यक्तित्व– जनता प्रेस, अजन्ता आफसेट नैनीताल, पृष्ठ संख्या– 6,105,108–109, 123
2. आचार्य नरेन्द्र देव स्मारिका – शिक्षा एवं विकास अंक, वर्ष –1889 –1956
3. आरोही वार्षिक पत्रिका, वर्ष– 2010 पृष्ठ संख्या –30

4. भाकुनी पूरन सिंह – आचार्य नरेन्द्र देव एक समग्र अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, कुमाऊँ विश्व विद्यालय नैनीताल–2002
5. भेंटवार्ता – बसन्ती खाती (आजीवन सदस्य – संरक्षक जनपद नैनीताल – आल इण्डिया वूमन्स कांफ्रेंसव पूर्व शिक्षिका – भारतीय शहीद सैनिक विद्यालय नैनीताल), स्थान – पार्वती आन सिंह सदन हल्द्वानी (नैनीताल)
6. भेंटवार्ता – देवी दत्त कबड़वाल (स्थानीय व्यापारी), निकट आरोही संस्थान, ग्राम सतोली – प्यूड़ा (नैनीताल)
7. भेंटवार्ता – जगदीश सिंह नयाल (कोषाध्यक्ष – आरोही संस्थान) स्थान – सतोली, प्यूड़ा –रामगढ (नैनीताल)
8. भेंटवार्ता – ज्योति प्रकाश (एडवोकेट नैनीताल व अध्यक्ष – आचार्य नरेन्द्र देव औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान), स्थान – मे विला बीना सदन, तल्लीताल– नैनीताल
9. भेंटवार्ता – प्रफुल्ल चन्द्र पन्त (न्यायाधीश) उच्च न्यायालय नैनीताल, स्थान– जज निवास, मल्लीताल नैनीताल, दिनांक – 10.06.2010 समय –सांयकाल –6.00 बजे
10. डांगी चन्दन – उत्तराखण्ड की प्रतिभाएं, पहाड़ परिक्रमा, तल्ला डांडा नैनीताल – 2003, पृष्ठ संख्या 262
11. नेगी, जगमोहन – राष्ट्रीय संस्कृति सम्पदा – सांस्कतिक पर्यटन एवं पर्यावरण, तक्षशिला प्रकाशन 23/4761, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली –2002 संस्करण 2002, पृष्ठ संख्या –248
12. प्रताप भैय्या के लेख – ' विकास महोत्सव ' (राष्ट्रीय पर्वतीय अंचल विकास विचार गोष्टी एवं दिल, दिमाग, हाथ, खेल, खलिहान उद्यान प्रदर्शनी के बढते कदम)।
13. रिपोर्ट पत्र – उत्तराखण्ड/उत्तरांचल का नियोजन कैसा हो? प्रकाशक– आचार्य नरेन्द्र देव शोध संस्थान नैनीताल।
14. सकलानी, शक्ति प्रसाद – उत्तराखण्ड की विभूतियॉ, उत्तरा प्रकाशन, ट्रांजिट कैम्प, रूद्रपुर, जिला – उधमसिंह नगर 2001, पृष्ठ संख्या – 348–349